10-2-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

बच्चों को दिलअन्दर कोई प्रश्न हो तो पूछ सकते हैं आगे बच्चों को लज्जा नही करनी चाहिये। बच्चों को बहुतों को समझाना है। खुद समझे हुये नही होंगे तो समझा भी नही सकेंगी। कहेंगी ब्रह्माकुमारियां कैसी होंगी। पक्का बनना चाहिये। अपन ही कहते है अपन को याद करो। यह रूहानी ज्ञान मनुष्य नहीं नही दे सकते है। वो सभी देह धारी मनुष्य समझाते है। अब आत्मा अभि अभिमानी बनना है। बैरिस्टर भी आत्मा बनती है। आत्मा कहती है मै महाराजा हूँ वकील हूँ। इस समय परमात्मा बाप दवारा मै राजाओं का राजा बनता हूँ। महाराजाओ के महाराजा कैसे बने होते है यह कोई समझ नही सकते। महाराजायें पतित हैं और दूसरे महाराजायेंजो पावन थे। पतित महाराजायें पावन की जाकर पूजा करते है। तो वो महाराजाओं के महाराजा हुये ना। बाप कहते है तुम पूज्य पवित्र महाराजा थे, फिर पुजारी बने है। जो पूज्य होकर गिरते है वही पूजा करते है। पतित पूजा करते है पावन की। अब तुमको पता पड़ा हम पावन महाराजायें थे। फिर पतित बने। बहुत दान पुण्य करते है तो रजाओं के घर मे बहुत शाहुकारों के घर मे जाकर जन्म लेते है। तुम अविनाशी ज्ञान रत्न दान करने से महाराजा महारानी बनते हो। भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग मे फर्क है। बाप समझाते है मै तुम बच्चों को महाराजाओं का महाराजा बनाता हूँ। मनुष्य तो कह नही सकते। वो कैसे कहेंगे? बनाने वाला ही एक बाप है वो ठैठ समझाते है। ज्ञान का सागर इतना ज्ञान देते है जो सागर को स्याही बनाओ जंगल की कलम बनाओ तो भी उतना नही आ सकते है। नालेज तो सहज है। बाकी याद करे-2 विकर्म विनाश करने मे समय लगता है। मनुष्य कहते है यां कोई शक्ति है वा परमात्मा से प्रेरणा मिलती है। बाप कहते है मै तो ज्ञान का सागर हूँ प्रेरणा कैसे करूगा। मुख से बोलना होता है कानो से सुनना पड़ता है। प्रेरणा आदि की भक्ति मार्ग का है। पहले मूल बात बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें। मुख्य है याद की यात्रा। इसमे मेहनत है। इसको कहा जाता है गुप्त मेहनत। आवाज भी बन्द है। मुख से बन्द शिव-2 वा शिवाय नमः भी नही कहना है। इसको गूंगे की मिठाई कहते है। हम शान्ती मे बाप को याद करते है। हमको राज योग मिलता है। कहते है ना तीन मिनट साइलेन्स। वो अर्थ नही समझते तुम्हारी इस शान्ती मे बहुत कमाई है। यह है गुप्त ज्ञान। अन्दरमे रहता है। नोटस भी इसी लिये लेते है कि याद रहे। जो होशियार है वो नोटस नही लेते। टापिक्स का भी नोटसहो कि आज फलानी टापिक पर समझाना है। पतित से पावन होने लिये बाप को ही बुलाते है। बाकी गंगा जल वा चरणामृत से थोड़ेही कोर पावन बन सकते है। अमृत तो ज्ञान को कहा जाता है। अमृत छोड़ विष क्यूं खाते हो? तो भक्ति मार्ग मे बहुत ही अगड़म, बगड़म है। अच्छा तुम ज्ञान अमृत से अमर बनते हो। अकाले मृत्यु वहां नही होती। यह अमर कथा है। बाप को और सृष्टी चक्र को चलाना। तुम बच्चियां सभी पार्वतियां हो द्रोपदियां हो। एक एक द्रोपदी एक एक दुशासन है। शास्त्रों मे लिख दिया है द्रोपदी को पांच पति थे। तो यह रस्म भी रख दी है। एक स्त्री पांच पति कर लेती है। वो निशानल भी रखते है। झट मालूम पड़ जाता है इनको कितने पति है। शास्त्रों से यह रीला हुआ है। वास्तव मे तुम एक एक द्रोपदी हो। द्रोपदी को नग्न होने से 2।जभी लिये बचाते है। तुम बच्चे पढ़ रहे हो।यह गीता पाठशाला है। यहां ऐम आबजेक्ट है नर से नरायण महाराजा बनने की। सब भाईयों का बाप एक है जो आकर पढ़ाते है। यह पढ़ाई तुमको अमरपुरी मे काम आती है। यह है रूहानी ज्ञान'रूह बाप रूहों से वार्तालाप करते है।आपने को आत्मा समझना है।हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ। आत्मा मेल है फीमेल नही। आत्मा ही बाप से वर्सा पाती है। मेल फीमेल दोनों की आत्मायें वर्सा पाती है।बाप ज्ञान का सागर है। 30वर्ष हुये होंगे समझाते समझाते।यह निराकार भगवानोवाच्य है सब आत्माओं प्रति। यह ब्रह्मा भी स्टुडन्ट है। पढ़ाने वाला एक ही शिव बाबा है। फिर तुम सब सीख कर पढ़ाते हो। यह पढाई कितनी सहज आफ इनकम है। सबको ब्रह्मचर्य मे रहना पड़ता है। एक जन्म विकार मे ना गये तो क्या बड़ी बात है। बाप कहते है हमारी दाढी की लाज रखो। ऐसी चलन ना चलो जो नाम बदनाम हो। हमारी ग्लानी नही करना। सतगुरु का निन्दक ठौर ना पावे। पद बहुत कम हो जावेगा। ओम शान्ती बच्चों को गुड नाईट